महाभोज

एक दृष्टि

सम्पादक

डॉ. नन्द लाल शर्मा

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

हिंदी विभाग

जगतपुर पी.जी. कॉलेज

वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत

महाभोज एक दृष्टि

Copyright© : Dr. Nand Lal Sharma
Publishing RightsⓅ : VSRD Academic Publishing
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

ISBN-13: 978-93-48703-43-9
FIRST EDITION, JANUARY 2025, INDIA

Printed & Published by:
VSRD Academic Publishing
(*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*)

Disclaimer: The author(s) / Editor(s) are solely responsible for the contents compiled in this book. The publishers or its staff do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the Author(s) or Editor(s) or Publishers to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise, without the prior permission of the Publishers & Author.

Printed & Bound in India

VSRD ACADEMIC PUBLISHING
A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.

REGISTERED OFFICE
154, Tezab mill Campus, Anwarganj, KANPUR–208003 (UP) (IN)
Mb:9899936803, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

MARKETING OFFICE
340, FF, Adarsh Nagar, Oshiwara, Andheri(W), MUMBAI–400053 (MH) (IN)
Mb:9956127040, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

vfHkunu

सदियों से साहित्य की विशिष्ट दृष्टि जीवन के आंतरिक संसार और वाह्य संसार दोनों को र्स्पश करती रही है जिससे एक ऐसे साहित्य का सृजन होता है जो सम्पूर्ण मनुष्यता का मार्गदर्शक बनकर अतीत की कड़ियों को भविष्य की कड़ियों से जोड़कर एक श्रृंखला का निर्माण करता है। यही वह स्रोत है जिसने मानवता को तथा मानव के हृदय को परिष्कृत कर उसे सौंदर्य प्रदान किया है। इसी से सशक्त होकर उच्चतम और महान साहित्य की रचना होती है। यदि हम यह कहें कि साहित्य वह नौका है जिस के सहारे हम जीवन के महासागर का भ्रमण करते हुए पुरातन स्मृतियों को पुनः जागृत करने के साथ–साथ अपने भीतर नवजागरण और नवाचार का संचार पाकर आनंद विभोर होते हैं, तो इस में कोई अतिष्योक्ति नहीं होगी। साहित्य मनोरंजन के साथ–साथ मार्गदर्षक की भूमिका भी निभाता है।

हमने बचपन में पढ़ा था कि 'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गीत' इस पंक्ति में वियोगी का अर्थ बहुत गहरा है, यहां इसका अर्थ। बीतरागी होने से नहीं है बल्कि निष्पक्ष और न्यायप्रिय से संदर्भ जोड़ता है। वह पहला कवि इस जगत में व्याप्त जड़ता से, समाज पर पड़ रहे दुष्प्रभावों से तथा इस संसार की कुरीतियों से दुखी था। उसके प्रतिरोध में वह खड़ा होना चाहता था और उसके लिये उसके पास सबसे सशक्त साधन कोई था तो वह साहित्य था।

साहित्य का सहज स्वभाव ही प्रतिरोध में खड़ा होना है। इसलिये आज के समय में एक नये नारे और नयी चेतना का संदर्भ देकर जो 'प्रतिरोध' का डंका पीटा जा रहा है, वह कोई नयी अवधारणा नहीं है। भारतीय परंपरा में साहित्य और आध्यात्म हमेषा समाज को बदलने में प्रयासरत रहे हैं। साहित्य और आध्यात्म मनुष्य को भीतर से बदलते हैं। साहित्य द्वारा किया गया परिवर्तण चिरस्थाई होता है। इस चिरसथाई परिवर्तण की ही जरूरत आज समाज को है। हम बहुत सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पास साहित्य का एक समृद्ध खजाना है। और आध्यत्म तो भारत की पहचान है। इसे वर्तमान पीढ़ी तक पंहुचाना आवष्यक है। साहित्य सृजन करना साहित्यकार की मजबूरी बन जाता है। क्योंकि वह जब भी किसी सहनीय या असहनीय घटना को देखता है तो उसके भीतर एक प्रतिक्रिया होने लगती है, भाव स्वतः मुंहजोर होकर प्रस्फुटित होने के लिए छटपटाने लगते हैं। ऐसी स्थिति में उसके पास एक ही रास्ता होता है कि वह उन भावों को लेखनीबद्ध कर ले। उसके मनोभाव कागज़ पर अक्षरों का रूप लेकर प्रकट होते हैं, और वही भाव पाठक को प्रभावित भी करते हैं। साहित्य को समाज

का प्रतिबिंब भी कहा जाता है। ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि साहित्यकार भी उसी समाज का अंग होता है, जिसका चित्रण वह अपने साहित्य में करता है। तभी तो हम जब किसी रचना को पढ़ते हैं तो उसमें व्यक्त भाव हमें अपने भुक्तभोगी लगते हैं। लेखक हो या कवि वह अपने विचारों का अदान प्रदान अपनी कृति के माध्यम से करता है, उसकी रचना में सिर्फ उसी की अनुभूति षामिल नहीं होती, उसमें अन्य लोगों की सोच और मनःस्थिति का चित्रण भी हुआ होता है। वही साहित्यिक रचना सफलता प्राप्त करती है जो आम जन का प्रतिनिधित्व करे तथा पढ़ने–सुनने वाले के मन में सुदूर गहराई में उतर कर स्थान पा ले। मात्र षब्दों का विस्तार साहित्य के लिए अवगुण ही समझा जाता है। कृति वही श्रेष्ठ होती है, जिस में कम से कम षब्दों में गहरी बात कही गई हो।

प्रस्तुत कृति ''महाभोज : एक दृष्टि'' मन्नू भण्डारी कृत उपन्यास महाभोज (1976) पर आधारित एक शोध ग्रन्थ है। इसका संपादन आदरणीय डॉ. नन्द लाल षर्मा ने बड़ी ही निपुणता के साथ किया है। इस शोध ग्रन्थ के नौ अध्यायों में विभिन्न शोध विषेषज्ञों द्वारा महाभोज को विभिन्न आयामों पर अनुशीलन विवेचन पर आधारित शोध पत्र संकलित हैं।

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ महाभोज को समझने में एक नयी दृष्टि प्रदान करेगा। भविष्य में विद्यार्थी और षोधार्थी तो निश्चित तौर पर इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ से लाभान्वित होंगे ही साहित्यकरों और आलोचकों को भी नए विषय मिलंगे अंत में इस प्रकार की महत्वपूर्ण पुस्तक के प्रकाशन पर मैं आदरणीय डॉ. नन्द लाल शर्मा जी का अभिनंदन करता हूं और उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं और अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

;'kiky fuely

संस्थापक

जम्मू–कश्मीर हिन्दी अकादेमी

(साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार 2014 से सम्मानित)

डा० सुशीलकुमार फुल्ल
एम.ए. (हिन्दी); एम.ए. (अंग्रेजी); पी-एच.डी.
सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, नागर विमानन मंत्रालय
सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार
सदस्य, परामर्श मण्डल, राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकत्ता

पूर्व प्रोफैसर एवं अध्यक्ष, भाषा विभाग
हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर
दूरभाष : (01894) 238054
पुष्पांजलि,
राजपुर (पालमपुर) 176 061

महाभोज पर विश्वकोश सम ग्रन्थ

ख्यातिलब्ध विद्वान डा. नन्दलाल शर्मा सम्पादित पुस्तक 'महाभोज : एक दृष्टि' एक बहुआयामी उपयोगी आलोचनात्मक कृति बन गई है, जिस में हिन्दी उपन्यास के विकास को रेखांकित करते हुए मन्नू भण्डारी के कालजयी उपन्यास 'महाभोज' का सर्वांगीण विश्लेषण एवं आज के सन्दर्भों में उस की प्रासंगिकता को दर्शाया गया है। नौ अध्यायों में विभिन्न पहलुओं पर, जिन में राजनीति में गिरावट, छल कपट, स्वार्थपरता, व्यवस्था की उच्छृंखलता, सामाजिक व्यवहार में दुष्चक्र का प्रभाव, पुलिसिया व्यवहार, गुण्डागर्दी आदि के अतिरिक्त नारी विमर्श, दलित विमर्श को भी मौलिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत आलोचना ग्रन्थ बहुत ही सफलता एवं गहनता से 'महाभोज' की बारीकियाँ औपन्यासिकता का उद्घाटन करता है, जिससे अस्सी दशक की उथल-पुथल का साक्षी बनता है और व्यंग्य से सम्पृक्त एक महत्वपूर्ण कृति बन कर समय का साक्षी बनता है। जिस प्रकार अपनी विषयवस्तु एवं प्रस्तुति के कारण श्रीलाल शुक्ल की कृति 'राग दरबारी' सार्वकालिक रचना बन गई है, उसी प्रकार नव-अध्यायों में छेड़ा गया सारगर्भित वर्णन और 'महाभोज' पर अन्तर्दृष्टि युक्त सार्वकालिक रचना बना देते हैं। एक दम उपयोगी, प्रासंगिक एवं विचारोत्तेजक।

(डा. सुशील कुमार फुल्ल)
वरिष्ठ कथाकार, साहित्यकार एवं आलोचक

रीव्यू

पुस्तक संपादक डॉ. नन्द लाल शर्मा ने एक ऐसे व्यक्तित्व की रचना को पाठ्य सामग्री के रूप में समक्ष रखा है जो हिंदी साहित्य की प्रख्यात लेखिका हैं, जिन्हें मुख्यतः नई कहानी आंदोलन से जोड़ा जाता है। उनके लेखन की विशेषता यह है कि वह अपने पात्रों और कथानकों के माध्यम से सामाजिक समस्याओं, मानवीय संवेदनाओं और स्त्री विमर्श को बड़े ही सहज और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं। ''आपका बंटी'', ''एक इंच मुस्कान'' और ''महाभोज'' उनकी प्रमुख कृतियों में से हैं। इसी यात्रा में ''महाभोज'', 1979 में प्रकाशित, केवल एक उपन्यास नहीं है, बल्कि यह उस समय के भारतीय राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य का आईना है। इसे ''राजनीतिक उपन्यास'' की श्रेणी में रखा जा सकता है, लेकिन इसकी सीमाएं केवल राजनीति तक नहीं रुकतींय यह मानव मूल्यों, नैतिकता और समाज के हाशिये पर जी रहे लोगों की व्यथा को भी सामने लाता है। इसी परिप्रेक्ष्य में मन्नू भंडारी का उपन्यास ''महाभोज'' एक महत्वपूर्ण सामाजिक–राजनीतिक कृति है, जो भारतीय समाज के राजनीतिक तंत्र, भ्रष्टाचार और मानवाधिकारों के हनन को गम्भीरता से उजागर करता है। यह उपन्यास अपने समय की सामाजिक वास्तविकताओं को प्रभावी ढंग से सामने लाने के लिए जाना जाता है। इसमें राजनीतिक षड्यंत्र, सत्ता की होड़ और आम जनता के शोषण का चित्रण किया गया है। पुस्तक संपादक डॉ. नन्द लाल ने जिस तत्परता से आलेख पुस्तक प्रारूप में सम्मिलित किये हैं सटीक और तर्कसंगत हैं।

''महाभोज'' की कथा एक गाँव के इर्द–गिर्द घूमती है। कहानी का प्रारम्भ एक दलित युवक बीसू की संदिग्ध हत्या से होता है। यह हत्या केवल एक व्यक्तिगत घटना नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक गहरी राजनीतिक साजिश छिपी हुई है। सत्ता में बैठे राजनेताओं द्वारा अपने लाभ और वोट बैंक को सुरक्षित बनाये रखने के लिए बीसू की हत्या को एक साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। बीसू की मौत के बाद, कहानी इस बात पर केंद्रित हो जाती है कि कैसे सत्ता, प्रशासन और मीडिया मिलकर इस घटना को अपने हितों के अनुरूप मोड़ देते हैं। बीसू का परिजन मित्र जन न्याय के लिए संघर्ष करता है, लेकिन उसे केवल निराशा हाथ लगती है। इस उपन्यास के माध्यम से मन्नू भंडारी ने दिखाया है कि सत्ता के खेल में आम आदमी की जिंदगी और भावनाएं कितनी तुच्छ हो जाती हैं।

पात्र चित्रण की दृष्टि से ''महाभोज'' के पात्र केवल चरित्र नहीं हैं। वे समाज के विभिन्न वर्गों, विचारधाराओं और प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बीसू दलित समुदाय का प्रतिनिधि है। वह एक साधारण युवक है, लेकिन उसकी हत्या यह दर्शाती है कि समाज में वंचित वर्ग को न्याय मिलना कितना कठिन है। बीसू उस निर्दोषता और असहायता का प्रतीक है जो सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के शिकार बनते हैं। सरकारी अधिकारी और नेता उपन्यास में राजनेताओं और नौकरशाहों को स्वार्थी, भ्रष्ट और निर्दयी दिखाया गया है। उनके लिए बीसू की मौत केवल एक राजनीतिक मुद्दा है। सत्ता में बैठे लोग न्याय के नाम पर केवल दिखावा करते हैं और अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए जनता की भावनाओं से खेलते हैं। उपन्यास में यह दिखाया गया है कि कैसे राजनीतिक नेता वोट बैंक और सत्ता को बनाए रखने के लिए किसी भी हद तक

जा सकते हैं। भोला की हत्या के बाद की घटनाएं इस बात का प्रमाण हैं कि न्याय और सत्य की कोई कीमत नहीं रह जाती जब बात राजनीतिक लाभ की हो।

अतः कहा जा सकता है कि ''महाभोज'' केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि यह समाज के लिए एक चेतावनी है। मन्नू भंडारी ने यह दिखाने की कोशिश की है कि अगर समाज में व्याप्त राजनीतिक भ्रष्टाचार, जातिवाद और अन्याय को रोका नहीं गया, तो इसका दुष्परिणाम सभी को भुगतना पड़ेगा। उपन्यास इस बात पर भी जोर देता है कि आम जनता को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होना चाहिए और अन्याय के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए।

यद्यपि ''महाभोज'' 1979 में लिखा गया था, लेकिन इसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। आज भी हम अपने समाज में भ्रष्टाचार, जातिवाद और राजनीतिक षड्यंत्र देखते हैं। बीसू की कहानी उन अनगिनत लोगों की कहानी है, जो आज भी न्याय और सम्मान के लिए संघर्ष कर रहे हैं । मन्नू भंडारी का उपन्यास ''महाभोज'' सामाजिक चेतना का एक सशक्त दस्तावेज है। यह उपन्यास पाठकों को समाज में व्याप्त समस्याओं और उनके समाधान के प्रति जागरूक करने का प्रयास करता है। इसमें न केवल राजनीति और प्रशासनिक तंत्र की असफलताओं को उजागर किया गया है, बल्कि यह भी दिखाया गया है कि समाज किस प्रकार इन असफलताओं का शिकार बनता है। ''महाभोज'' सामाजिक चेतना को लेकर अनेक गहरे सवाल उठाता है और पाठकों को इस दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करता है। सामाजिक चेतना का तात्पर्य उस जागरूकता से है, जो व्यक्ति या समाज को अपने आसपास की समस्याओं, अन्याय, और असमानताओं को समझने और उनके समाधान के लिए प्रेरित करता है। यह केवल समस्याओं को पहचानने तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज को बेहतर बनाने के लिए सक्रिय कदम उठाने की भावना को भी प्रकट करता है।

मेरा मंतव्य है कि ''महाभोज'' सामाजिक चेतना को जगाने वाला एक ऐसा उपन्यास है, जो पाठकों को अपने आसपास की समस्याओं को समझने और उन्हें हल करने की दिशा में कदम उठाने के लिए प्रेरित करता है। मन्नू भंडारी ने न केवल सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को उजागर किया, बल्कि यह भी दिखाया कि समाज को कैसे अपनी चुप्पी तोड़कर और एकजुट होकर बदलाव लाना चाहिए। अपने आलेखों में सुधी विद्वानों ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि ''महाभोज'' हमें यह संदेश देता है कि अगर समाज में न्याय और समानता लानी है, तो हर व्यक्ति को अपनी भूमिका निभानी होगी। सामाजिक चेतना केवल एक विचार नहीं हैय यह समाज को बदलने की पहली शर्त है। मन्नू भंडारी का यह उपन्यास ''महाभोज'' यथार्थ बोध का एक सशक्त उदाहरण है। यह केवल कथा नहीं, बल्कि भारतीय समाज की सच्चाई का दर्पण है। इस उपन्यास में लेखिका ने समाज की उन परतों को उजागर किया है, जो अक्सर नंगी आँखों से नहीं दिखतीं। इसमें सत्ता, समाज और व्यवस्था का गहराई से विश्लेषण करते हुए यथार्थ की कटुता को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

अतः यह कहना समीचीन है कि मन्नू भंडारी का ''महाभोज'' यथार्थ बोध का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह उपन्यास न केवल समाज की सच्चाइयों को सामने लाता है, बल्कि पाठकों को उनके प्रति जागरूक भी करता है। ''महाभोज'' हमें यह सिखाता

है कि समाज में बदलाव लाने के लिए सबसे पहले हमें उसकी वास्तविकता को समझना होगा और फिर इसे बदलने के लिए अपने प्रयास करने होंगे। सम्पादित पुस्तक कुल नौ अध्यायों में विद्वानों ने समाज की यथार्थ तस्वीर को उकेरने का प्रयास किया है जो पाठकों का मार्ग प्रशस्त करेगी ऐसा मेरा मंतव्य है।

M,- bUæf lg Bkdj
निदेशक
दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केन्द्र एवं सह अधिष्ठाता–छात्र कल्याण
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला (हि.प्र.)
एवं पूर्व सदस्य, हिमाचल कला भाषा एवं संस्कृति अकादमी, (हि.प्र.)

दो शब्द

पाठक के समक्ष प्रस्तुत पुस्तक महाभोज एक दृष्टि वास्तव में एक ऐसे दृश्य का पुनः दर्शन है जो केवल हरिजन बस्ती ही नहीं बल्कि जाति और धर्म से ऊपर उठकर वो सभी व्यक्ति जिसके पास मेहनत और मजदूरी के अलावां कुछ भी नहीं है का दृश्यांकन है । जिनको दो वक्त की रोटी, भर पेट मयस्सर नहीं है, उनके लिये हर उठती हुई आवाज को कुचलने और उस आवाज को चीख में बदलने के लिये एक वर्ग विशेष सदैव तत्पर है । इस वर्ग की न जाति है और न धर्म, यह किसी भी जाति–धर्म से हो सकता है । यह एक ऐसी नस्ल है जो पैसे और धन के हवस से जन्म लेती है । 1979 ई. मे मन्नू जी द्वारा लिखित महाभोज उपन्यास एक ऐसे ही तात्कालिक टीस से उत्पन्न हुई रचना है। इस उपन्यास की पूर्व पीठिका त्रिशंकु कहानी संग्रह के अलगाव कहानी के रूप में प्रकाशित हो चुकी थी, पर क्या पता यह घाव नासूर बन जाएगा जिसका उपचार उपन्यास लिखे जाने के बाद भी कठिन होगा। यह पुस्तक उपचार तो नहीं किन्तु जागरूकता की दिशा में एक स्तुत्य प्रयास जरूर है जो लेखिका के न रहने पर भी उनके होने का आभास कराता है । यह उनका जुनून ही है की सच को सच और भ्रष्ट को भ्रष्ट कहने का माद्दा रखता है ।

डॉ. नन्द लाल शर्मा

CONTENTS

अध्याय-एक

हिन्दी उपन्यास की संक्षिप्त विकास यात्रा और मन्नू भण्डारी का परिचय. 1-10

- **डॉ. नन्द लाल शर्मा**

अध्याय-दो

औपन्यासिक तत्वों की कसौटी पर महाभोज.................................... 11-23

- **डॉ. नन्द लाल शर्मा**

अध्याय-तीन

महाभोज, अपने समय से आगे का उपन्यास.................................... 24-29

- **प्रेम शशांक**

अध्याय-चार

लोकतन्त्र से जुड़े कुछ प्रश्न 30-35

- **रविंद्र त्रिपाठी**

अध्याय-पांच

महाभोज-सत्ता तंत्र के दुष्चक्र में हाशिए का समाज............................. 36-43

- **वीरेन्द्र यादव**

अध्याय-छः

सरोहा में 'महाभोज' वाया बेलछी 44-55

- **रणेंद्र**

अध्याय-सात

महाभोज : दलित प्रसंग... 56-61

- **चमन लाल**

अध्याय-आठ

नाट्य मंडलियों का पसंदीदा नाटक 'महाभोज' 62-68

- **देवेंद्र राज अंकुर**

अध्याय-नौ

महाभोज एक दृष्टि 69-77

- **डॉ. नन्द लाल शर्मा**